28/12/2020 V 1

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न ① रस्सी यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर - यहाँ रस्सी शब्द का प्रयोग मनुष्य के साँस या प्राण के लिए हुआ है, जिसके सहारे वह शरीर-रूपी नाव को खींच रहा है। वह रस्सी अत्यंत कमज़ोर है। वह कब टूट जाए कुछ कहा नहीं जा सकता।

प्रश्न ② कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर कवयित्री लोभ, मोह-माया आदि से मुक्त नहीं हो पायी है। वह कोरी प्रभु भक्ति के सहारे अर्थात् 'हठमार्ग' के द्वारा भव सागर पार करना चाहती है। इसी कारण उसके द्वारा किये जाने वाले प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं।

प्रश्न ③ कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है?

उत्तर भावार्थ- No-1 के प्रश्नोत्तर (7) को देखें। वह उत्तर ही इस प्रश्न का उत्तर है।

प्रश्न-④ भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) जेब टटोली कौड़ी न पायी।

P-T-O.

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर(क) 'जेब टटोली कौड़ी न पाई' का भाव यह है कि सहज भाव से प्रभु भक्ति न करके कवयित्री ने हठयोग का सहारा लिया। इसी कारण जीवन के अंत में उसे कुछ भी प्राप्त नहीं सका। कहने का भाव यह है कि संसार में रहकर भी वह सत् कर्म न कर सकी जो उसकी प्रभु भक्ति में सहायक होती।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम कवयित्री ने मनुष्य को संयम बरतते हुए सदैव मध्यम मार्ग को अपनाने का सुझाव दिया है। भोग-विलास में अधिक डूबे रहने के कारण मनुष्य को कुछ भी प्राप्त नहीं होगा और भोगों से विमुखता एवं त्याग की भावना से मन में अहंकार का भाव पैदा होगा।

प्रश्न-5 बंद दवार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय अपनाने का सुझाव दिया है?

अथवा

कवयित्री के अनुसार बंद दवार की साँकल कैसे खुलती है?

उत्तर बंद दवार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री ने निम्नलिखित उपाय अपनाने का सुझाव दिया है—

(1) मनुष्य को सांसारिक विषयों में न अधिक

लिप्त रहना चाहिए और न इनसे विमुख होना चाहिए। उसे बीच का रास्ता अपनाकर संयमपूर्ण जीवन जीना चाहिए।

(2) मनुष्य को सभी प्राणियों को समान दृष्टि या समान भाव से देखना चाहिए।

(3) प्रभु की सच्ची भक्ति करनी चाहिए।

(4) आडंबरों से दूर रहना चाहिए

(5) सरल मार्ग अपनाकर प्रभु भक्ति के लिए सत्कर्म करना चाहिए।